

दि कामक पोर्ट

वर्ष : 8, अंक : 24

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 फरवरी 2023 से 7 फरवरी 2023

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

दुबई में पर्यावरण पर आयोजित होगा दो दिवसीय सम्मेलन, राजस्थान के बिश्नोई समाज की रहेगी बड़ी भूमिका

दुबई दुबई में आगामी 4-5 फरवरी को एक बड़ा कार्यक्रम है, इन सब के बीच बीकानेर में कार्यक्रम से पहले प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में फारूक अब्दुल्ला, पीपी चौधरी, पूर्व सांसद न कुलदीप बिश्नोई, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेन्द्र बुड़िया, सरदार राणा सोढ़ी सहित समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति इस सम्मेलन में शिरकत करेंगे।

जिसमें आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर की अध्यक्षा डॉ. इंद्रा बिश्नोई ने बताया कि आज विश्व के सामने अनेक ज्वलंत समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, जिसमें पर्यावरण प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या है। यह जितनी बड़ी समस्या है अफसोस है कि इसके लिए प्रयास उतने ही कम हुए हैं और लगता है कि विश्व इसके प्रति संवेदनशील और गंभीर नहीं है। विकास के नाम पर आए दिन पर्यावरण की बलि दी जाती है। प्रकृति के विनाश के बदले किया गया विकास हमारे क्या काम आएगा? जब इस अतिक्रमण से आहत प्रकृति त्रुट्ठ हो जाएगी और इस धरती पर संपूर्ण जीव प्रजातियां के साथ-साथ मनुष्य जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। आश्वर्य है कि सन् 1970 से पहले विश्व ने पर्यावरण प्रदूषण को खतरा ही नहीं माना था, शुक्र है कि इसके बाद कुछ प्रयास इस दिशा में शुरू हुए परन्तु वे पर्यास नहीं हैं। बिश्नोई समाज विश्व भर में धरती पर एक मात्र ऐसा समाज है जो पिछले पांच सौ सालों से पर्यावरण प्रदूषण को लेकर चिंतित है और इसके समाधान



के लिए गंभीर प्रयास भी कर रहा है। इसका साक्ष्य यही है कि इन पांच सौ सालों में इस समाज के हजारों लोगों ने वृक्षों और वन्य जीवन को बचाने के लिए अपना बलिदान दिया है। अब समाज का यह उद्देश्य है की यह पर्यावरण संरक्षण का संदेश भारत से बाहर भी जाए और इसके दुबई को चुना गया है, दुबई में आज समग्र विश्व का दर्शन होता है। %%वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियां और बिश्नोई समाज के सिद्धांतों में समाधान विषय पर 4-5 फरवरी को दुबई में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में धरती के पर्यावरण को बचाने को लेकर चर्चा की जाएगी। प्रकृति के साथ साहचर्य- यह बिश्नोई जीवनशैली का आधार है।

वृक्षों की अधिकता बिश्नोई गांवों और खेतों की पहचान है, वन्य जीव बिश्नोईयों के साथ एक परिवार के सदस्य की तरह रहते हैं। हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, स्वतंत्रता आंदोलन के नायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का

अहिंसा का आदर्श आज सारा विश्व मान रहा है, बापू अपने प्रिय भजन में गाते थे - %%वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड परायी जाए रे पर दुःखे उपकार करे तो ये, मन अभिमान न आणे रे। उन लोगों को वैष्णव कहो, जो दूसरों की पीड़ा अनुभव करें जो दुःखी हैं उनकी सहायता करें, लेकिन अपने मन में कभी भी अहंकार न आने दें। बिश्नोई

एक प्रकार से कहें तो इस आजादी के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर गुरु जम्भेश्वरजी के बिश्नोई और बापू के वैष्णव दुबई में एक सुंदर, सुखद, शान्त, सहज, अहिंसक, पर्यावरण प्रेमी विश्व के निर्माण के लिए चिंतन करेंगे। दो दिन तक चलने वाले इस सम्मेलन में वरिष्ठ पर्यावरणविद् अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेंगे शारजाह ही बापू के वास्तविक वैष्णव हैं। यूनिवर्सिटी कैंपस, स्काईलाइन

यूनिवर्सिटी कॉलेज में विक्टोरिया स्पोर्ट्स अकेडमी के खेल मैदान में खेजड़ी बलिदान के शहीदों को समर्पित 363 खेजड़ी के वृक्ष लगाए जाएंगे।

जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा मुकाम और जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर की गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण संरक्षण शोधपीठ के तत्वावधान में आयोजित इस सम्मेलन में भारत से पांच सौ पर्यावरण प्रेमी भाग लेने के लिए जा रहे हैं। सम्मेलन में कुल 509 पंजीयन हुए हैं जिसमें बहरीन, युएई, वेस्ट इंडीज सहित देश विदेश से बड़ी संख्या में पर्यावरण विद शारीक हो रहे हैं। पत्रकार वार्ता में उपचार्य डॉ. इन्द्र सिंह राजपुरोहित, देवेन्द्र बिश्नोई, डॉ. बी. एल. बिश्नोई, राजाराम धारनिया, डॉ. अनिला पुरोहित, डॉ. राजेंद्र पुरोहित एवं लालचंद बिश्नोई उपस्थित रहे।

भारत और जापान- वसुधैव कुटुम्बकम की दिशा में दुनिया के भविष्य को आकार देने का अनूठा अवसर

नई दिल्ली। पर्यावरण समाज के दौरान केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव और जापान के पर्यावरण मंत्री अकिहिरो निशिमुरा के साथ द्विपक्षीय बैठक हुई, इस बैठक में दोनों नेताओं के मध्य त्र/व20 सहयोग, लाइफ, समुद्री और प्लास्टिक अपशिष्ट, COP-27 तथा CBD-15 सहित कई मुद्दों पर चर्चा हुई। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि दोनों देशों को मिलकर एक स्थायी, समग्र, दायित्वपूर्ण और समावेशी तरीके से दुनिया में सभी के लिए न्यायसंगत और समान विकास को बढ़ावा देना चाहिए। इसके अलावा दोनों देशों ने सहयोग को और बढ़ावा देने के साथ-साथ बहुपक्षीय रूपरेखाओं में एक साथ काम करने पर भी अपनी सहमति जताई बैठक में दोनों देशों ने पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए प्रतिबद्धता जाहिर करते हुए कहा कि दुनिया को जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता के नुकसान के संकट का मुकाबला करने के लिए उत्पादन और खपत के मुद्दे का तत्काल समाधान करने की जरूरत है। इसके अलावा Mission OLFEO यानी सभी के लिए पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली के महत्व पर भी प्रकाश डाला। भारत ने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने और जरूरी तकनीकी सहयोग करके विकासशील देशों के विकास लक्ष्यों का समर्थन करने की भी प्रतिबद्धता जाहिर की। इस विचार को पीएम मोदी ने साल 2021 में ग्लासगो में 26 वें ईड़क-26 के दौरान पेश किया था। इसका उद्देश्य 2022-28 की अवधि में पर्यावरण संरक्षण के लिए कम से कम एक बिलियन भारतीयों और वैश्विक नागरिकों को जुटाना है। इसके अलावा भारत में ही सभी गांवों और शहरी स्थानीय निकायों में कम से कम 80 प्रतिशत लोगों को वर्ष 2028 तक एनवायरमेंट फैंडली बनाने का लक्ष्य भी रखा है।

हर साल 2,675 एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक के कणों के सम्पर्क में आ रहे हैं लोग

एक नए अध्ययन में पाया गया है कि लोग हर साल हजारों एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक्स के संपर्क में आते हैं। अध्ययन में श्रीलंका में इनडोर और आउटडोर की जगहों में एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक (एएमपी) के बहुत अधिक मात्रा और इसे संभावित स्रोतों के बारे में पता लगाया गया। जहां घरों के अंदर माइक्रोप्लास्टिक की 28 गुना अधिक मात्रा पाई गई। यहां बताते चलें कि, एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक बहुत सूक्ष्म और हल्के कण होते हैं, जो हवा के द्वारा घर के अंदर या वातावरण में आसानी से फैल जाते हैं।

अधिकांश एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक की लंबाई एक मिमी से कम होती हैं और उन्हें रेशा या फाइबर जो कि लंबे और पतले, तथा बिना फाइबर के रूप में आकार के आधार पर बांटा जाता है। लोग अपना लगभग 90 फीसदी वक्त घर के अंदर बिताते हैं और इस अध्ययन में पहचाने गए इनडोर और आउटडोर माइक्रोप्लास्टिक के स्तरों के आधार पर, शोधकर्ताओं ने प्रति वर्ष, प्रति व्यक्ति औसत 2,675 एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक कणों के सम्पर्क में आने के खतरों की गणना की। ऑस्ट्रेलियन रिवर्स इंस्टीट्यूट की शोधकर्ता कुशनी परेरा ने कहा जबकि माइक्रोप्लास्टिक वाले वातावरण में सांस लेना प्लास्टिक से लोगों को होने वाले खतरे का एक अहम मार्ग है, हवा में उनकी मात्रा को लेकर बहुत कम आंकड़े हैं। एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक्स (एएमपी) पर अधिकांश शोध उच्च आय वाले देशों तक सीमित हैं, जहां कचरे का प्रबंधन अच्छी तरह से किया जाता है, निम्न और मध्यम आय वाले देशों में इस तरह के केवल मुट्ठी भर अध्ययन होते हैं। माइक्रोप्लास्टिक पर उपलब्ध कुछ अध्ययनों ने आम तौर पर एक निष्क्रिय नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके एयरबोर्न प्लास्टिक एकत्र किया है, जहां वे गीली या सूखी स्थितियों में वातावरण से बाहर जमा होते हैं। इस विधि में यह तर्क दिया जा सकता है कि, सांस लेने के माध्यम से माइक्रोप्लास्टिक के खतरों का मूल्यांकन करना सही नहीं है। इस कारण से, शोधकर्ताओं ने एक सक्रिय नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया जिसने एक फिल्टर के माध्यम से हवा की ज्ञात मात्रा को पंप किया और संचित एमपी का मूल्यांकन किया। परिवेशी वायु-जनित माइक्रोप्लास्टिक स्तरों के लिए लोगों को होने वाले खतरों की पहचान करने के लिए सक्रिय नमूनाकरण एक अच्छा तरीका है। ऑस्ट्रेलियन रिवर इंस्टीट्यूट में एआरआई टॉक्सिकोलॉजी रिसर्च प्रोग्राम (एआरआईटीओएक्स) का नेतृत्व करने वाले सह-अध्ययनकर्ता प्रोफेसर फेडरिक लेउश ने कहा कि जहां तक हमारी जानकारी है, सक्रिय सैंपलिंग या नमूनाकरण पद्धति का उपयोग करके माइक्रोप्लास्टिक (एएमपी) की पहचान करने और इसकी मात्रा निर्धारित करने के लिए दक्षिण एशिया में कोई पिछला अध्ययन नहीं किया गया है।

शोधकर्ताओं ने अलग-अलग जनसंख्या घनत्व वाले विभिन्न शहरी, ग्रामीण, तटीय, आंतरिक, औद्योगिक और प्राकृतिक आवासों से हवा के नमूने एकत्र किए। बाहरी वातावरण के प्रकार की परवाह किए बिना, इनडोर एमपी स्तर, ज्यादातर वस्त्रों और कपड़ों से बने फाइबर और सामयिक टुकड़ों से बने होते हैं, जो बाहरी स्तरों की तुलना में एक से 28 गुना अधिक होते हैं। 0.10 से 0.50 मिलीमीटर के आकार की सीमा में पारदर्शी, नीले और काले रंग के रेशे सभी जगहों पर पाए गए थे। प्रोफेसर ल्यूश ने कहा श्रीलंका के इन शुरुआती परिणामों से पता चलता है कि इनडोर एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा बाहरी वातावरण की तुलना में इनडोर स्रोतों और रहने वालों की



जीवन शैली से अधिक संबंधित है। बाहरी नमूनों में, कम घनत्व वाले क्षेत्रों की तुलना में उच्च घनत्व वाले स्थलों में एएमपी की मात्रा हमेशा अधिक पाई गई, यह सुझाव देते हुए कि एएमपी की बहुतायत और वितरण जनसंख्या घनत्व, औद्योगिकरण के स्तर और मानव गतिविधि से संबंधित था। इनडोर और आउटडोर दोनों जगहों में प्रमुख प्रकार के माइक्रोप्लास्टिक पीईटी फाइबर (पॉलीइथाइलीन टेरेफ्थेलेट) थे, जो मुख्य रूप से कपड़ों से उत्पन्न होते हैं। परेरा ने कहा, यह अध्ययन पहला एक महत्वपूर्ण कदम है, जो दक्षिण एशिया के एक निम्न-मध्यम आय वाले देश में एएमपी की प्रचुरता को दर्शाता है। उन्होंने कहा इस क्षेत्र में और अधिक शोध किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि यह दुनिया की आबादी का लगभग एक चौथाई हिस्सा है और वैश्विक प्लास्टिक कचरे के लिए दूसरा सबसे बड़ा जिम्मेवार है। आज तक, न केवल दक्षिण एशिया में बल्कि दुनिया भर में एयरबोर्न माइक्रोप्लास्टिक (एएमपी) के लिए बहुत सीमित निगरानी और शमन उपायों को लागू किया गया है। एएमपी की बहुतायत और वितरण पर एक डेटाबेस बनाने के लिए और सांस लेने और संभावित स्वास्थ्य को होने वाले खतरों के माध्यम से लोगों को होने वाले खतरों का सटीक आकलन करने के लिए दुनिया भर में लंबे समय तक निगरानी की आवश्यकता है। यह अध्ययन एनवार्यनमेंटल साइंस एंड टेक्नोलॉजी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

नशे को हतोत्साहित करने के लिए नई शराब नीति में होंगे प्रावधान- मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि हम अपने बच्चों को रामायण भी पढ़ायेंगे और गीता एवं गीता का सार भी। इन ग्रन्थों का अध्ययन भारत भूमि पर नहीं होगा तो कहाँ होगा। भौतिकता की अग्नि से धृष्टकर्ती मानवता को शाश्वत शांति का दिग्दर्शन भारत ही कराएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान भेल दशहरा मैदान में श्रीराम कथा स्थल पर उपस्थित जन-समुदाय को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान, पत्नी श्रीमती साधना सिंह के साथ पद्म विभूषण श्री चित्रकूट तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करने भोजपाल महोत्सव मेला समिति द्वारा भेल दशहरा मैदान में आयोजित श्रीराम कथा स्थल पहुँचे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भगवान श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण कर तिलक किया।

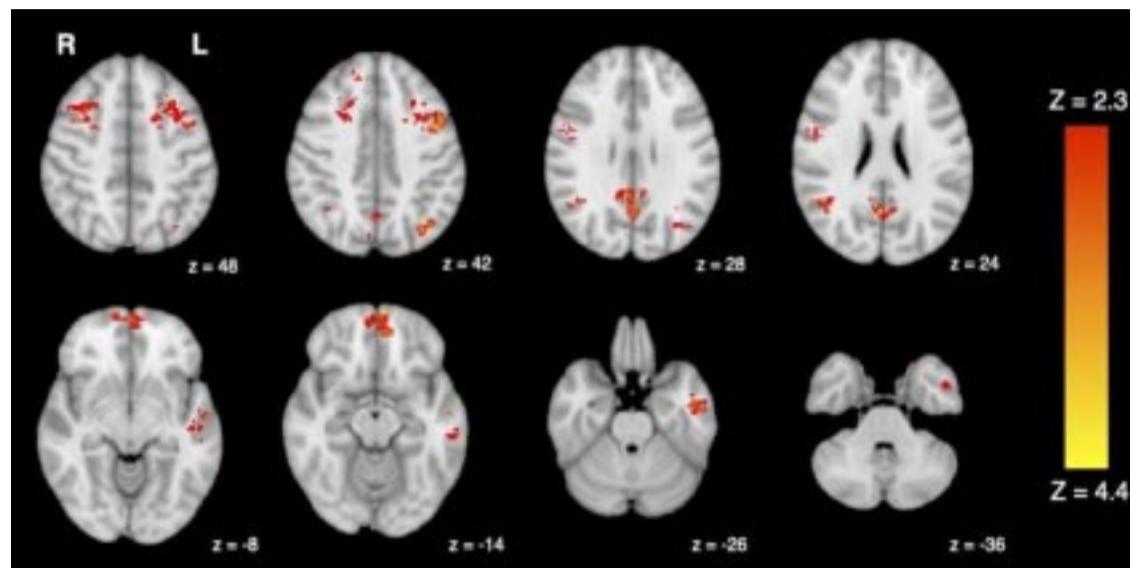
मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि स्वामी रामभद्राचार्य जी ने युवाओं को शुद्ध करने का संदेश दिया है। प्रदेश में यह अभियान प्रभावशीलता के साथ जारी है। माता, बहन और बेटियों के साथ गलत व्यवहार करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही जारी है। हमारी संस्कृति को भव्य स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से ही श्रीमहाकाल महालोक कौरीडोर विकसित किया गया है। इसी ऋतु में ओंकारेश्वर में आदि शंकराचार्य जी की भव्य प्रतिमा स्थापित करने का कार्य जारी है। चित्रकूट में भगवान श्रीराम ग्यारह साल ग्यारह महीने ग्यारह दिन रहे। अतः भगवान श्रीराम की बन लीलाओं के सजीव चित्रण पर कौरीडोर विकसित किया जाएगा। ओरछा में भगवान श्रीराम की बाल लीलाओं का प्रदर्शन भी किया जाएगा। इससे आने वाली पीढ़ी को हमारी संस्कृति और मान्यताओं के संबंध में जानकारी प्राप्त होगी।

वाहनों के प्रदूषण का केवल दो घंटे का संपर्क ही दिमाग पर डाल सकता है असर

न्यूयार्क। क्या आप जानते हैं कि यातायात में प्रदूषण का कुछ घंटों का संपर्क भी आपके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। इस बारे में हाल ही में वैज्ञानिकों द्वारा किए नए अध्ययन से पता चला है कि ट्रैफिक प्रदूषण के केवल दो घंटों के संपर्क में रहने से हमारी दिमागी गतिविधियां प्रभावित हो सकती हैं। गौरतलब है कि ब्रिटिश कोलंबिया और विक्टोरिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया यह दुनिया में अपनी तरह का पहला अध्ययन है जिसमें इस बात का खुलासा किया गया है कि यातायात प्रदूषण का सामान्य स्तर भी कुछ घंटों में मानव मस्तिष्क की कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकता है। जर्नल एनवायर्नमेंटल हेट्थ में प्रकाशित इस अध्ययन के नतीजे दर्शाते हैं कि वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से मस्तिष्क पर बड़ी तेजी से प्रभाव पड़ता है। रिसर्च के मुताबिक डीजल प्रदूषण के सिर्फ दो घंटों के संपर्क में आने से इंसानी मस्तिष्क की फंक्शनल कनेक्टिविटी में कमी आ जाती है। गौरतलब है कि मस्तिष्क की यह फंक्शनल कनेक्टिविटी इस बात की माप है कि मस्तिष्क के विभिन्न हिस्से एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत और संवाद करते हैं।

अपने इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क की गतिविधियों में आए बदलावों के अध्ययन के लिए फंक्शनल मैग्नेटिक रेसोनेंस इमेजिंग (एफएमआरआई) तकनीक की मदद ली है। वैज्ञानिकों ने अध्ययन के दौरान मस्तिष्क के डिफॉल्ट मोड नेटवर्क (डीएमएन) में बदलाव का विश्लेषण किया है, जो आपस में एक दूसरे से जुड़े मस्तिष्क के हिस्सों का एक समूह है। यह हिस्से स्मृति और हमारी अंतरिक सोच में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैज्ञानिकों ने जानकारी दी है कि साफ हवा की तुलना में डीजल उत्सर्जन के संपर्क में आने के बाद %डीएमएन% के व्यापक हिस्सों में फंक्शनल कनेक्टिविटी में कमी दर्ज की गई थी। इस बारे में अध्ययन से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता और विक्टोरिया विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर डॉक्टर जोडी गवरिलुक ने जानकारी दी है कि, हम जानते हैं कि डीएमएन के हिस्सों में फंक्शनल कनेक्टिविटी में आती कमी संज्ञानात्मक प्रदर्शन में गिरावट और अवसाद के लक्षणों से जुड़ी हुई है। हालांकि साथ ही उन्होंने यह भी माना कि इन बदलावों के कार्यात्मक प्रभावों को पूरी तरह से समझने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है। उनके अनुसार यह संभव है कि यह बदलाव लोगों की सोच या कार्य करने की क्षमता को भी कमज़ोर कर सकते हैं। वहीं अध्ययन से जुड़े अन्य शोधकर्ता डॉक्टर क्रिस कार्लस्टन का कहना है कि विशेष रूप से मस्तिष्क में जो यह बदलाव देखे गए थे वो अस्थाई थे। वायु प्रदूषण के जोखिम के बाद मस्तिष्क में कनेक्टिविटी सामान्य हो गई थी। हालांकि उनका अनुमान है की यह प्रभाव उन क्षेत्रों में लम्बे समय तक रह सकते हैं जहां प्रदूषण का निरंतर जोखिम बना रहता है। उनके अनुसार लोगों को उस हवा के बारे में सावधान रहना चाहिए जिसमें वो सांस ले रहे हैं। साथ ही उनका मानना है कि कारों से निकलने वाले प्रदूषण जैसे हानिकारक वायु प्रदूषकों के संपर्क में आने से बचने के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए।

भारत में भी गंभीर है प्रदूषण की स्थिति- देखा जाए तो आज बढ़ता वायु प्रदूषण दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या बन



चुका है। आलम यह है कि आज इस अदृश्य खतरे से दुनिया का कई भी क्षेत्र सुरक्षित नहीं है। वैश्विक स्तर पर वायु प्रदूषण की समस्या कितनी गंभीर है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार दुनिया की 100 फीसदी आबादी ऐसी हवा में सांस ले रही है जोकि उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। भारत में तो इसका खतरा कई गुना ज्यादा है। अनुमान है कि बढ़ते प्रदूषण के चलते दुनिया भर में हर साल करीब 90 लाख लोग असमय काल के गाल में समा जाते हैं। जर्नल नेचर कम्युनिकेशन में प्रकाशित एक नए अध्ययन के हवाले से पता चला है कि भारत में हर साल दो लाख से ज्यादा अजन्मों को बढ़ता वायु प्रदूषण गर्भ में ही मार रहा है। वहीं एक अन्य रिसर्च के मुताबिक वायु प्रदूषण के चलते दक्षिण एशिया में हर साल तकरीबन साढ़े तीन लाख महिलाएं मातृत्व के सुख से वंचित रह जाती हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा 29 जनवरी 2023 को जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार देश के 183 में से 19 शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर %बेहद खराब% दर्ज किया गया, जोकि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा तथा मानकों से कई गुना ज्यादा था। वहीं दूसरी तरफ देश के केवल आठ शहरों में हवा की गुणवत्ता %बेहतर% दर्ज की गई, जबकि 42 शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर खराब दर्ज किया गया था। वहीं यदि देश के बड़े शहरों की बात करें तो दिल्ली में एयर क्लाइटी इंडेक्स 331 दर्ज किया गया वहीं फरीदाबाद में 346, गाजियाबाद में 292, गुरुग्राम में 290, नोएडा में 302, ग्रेटर नोएडा में 320 पर पहुंच गया है। इसी तरह मुंबई में वायु गुणवत्ता सूचकांक 176 दर्ज किया गया, जो प्रदूषण के %मध्यम% स्तर को दर्शाता है। देश में यह समस्या कितनी गंभीर है इसका अंदाजा एनर्जी पालिसी इंस्टीट्यूट द्वारा जारी हालिया रिपोर्ट से लगाया जा सकता है, जिनके अनुसार बढ़ता प्रदूषण हर दिलीवासी से उसके जीवन के औसतन 10.1 साल छीन रहा है, जबकि बढ़ते प्रदूषण के चलते लखनऊ वालों की औसत आयु साढ़े नौ साल तक घट सकती है। वहीं यदि एक औसत भारतीय की जीवन सम्भावना की बात करें तो बढ़ता प्रदूषण उसमें औसतन पांच साल तक कम कर रहा है। ऐसे में यह जरूरी है कि बढ़ते प्रदूषण को रोकने और उससे बचाव के लिए जल्द से जल्द कड़े कदम उठाए जाने चाहिए। देश में वायु प्रदूषण के बारे में ताजा अपडेट आप डाउन टू अर्थ के एयर क्लाइटी ट्रैकर से प्राप्त कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्लेबेक सिंगर शान, सुश्री नीति मोहन और म्यूजिक कंपोजर श्री शिवमणि के साथ लगाए पौधे

भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया, पद्मश्री से सम्मानित विश्वविद्यालय म्यूजिक कंपोजर और ड्रमर श्री शिवमणि, हिंदी सिनेमा के जाने-माने प्लेबेक सिंगर श्री शान तथा सुश्री नीति मोहन के साथ श्यामला हिल्स स्थित उद्यान में पीपल, नीम, अमरुद और जामुन के पौधे लगाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपने सृजन और कला से पूरी दुनिया में देश का नाम रोशन करने वाले संगीत से जुड़े तीनों कलाकारों का स्वागत किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ पौधे लगाने के बाद तीनों कलाकारों ने %मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे-मोती% गाना गाकर वातावरण को उत्साह से भर दिया। म्यूजिक कंपोजर श्री शिवमणि ने पौधों में पानी देने वाले पात्र (बाल्टी) का ड्रम के रूप में उपयोग करते हुए गाने पर संगीत दिया। श्री शान ने खेलो इंडिया के एंथम हन्दुस्तान का दिल धड़का दो – एमपी में शोर मचा दो% और सुश्री नीति मोहन ने नर्मदाष्टकम की कुछ पंक्तियाँ गाईं। मुख्यमंत्री श्री चौहान के प्रतिदिन पौधे लगा कर जन-सामान्य को पौध-रोपण के लिए प्रेरित करने के अभियान की तीनों कलाकारों ने सराहना की।



फायदेमंद हो सकती है समुद्री सिवार की खेती, कृषि भूमि उपयोग में 11 करोड़ हेक्टेयर की होगी बचत

नई दिल्ली। जैसे-जैसे इंसानी जरूरतें बढ़ रही हैं उनके साथ-साथ कृषि उत्पादन के लिए भूमि पर भी दबाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में क्या सीवीड फार्मिंग इस कृषि भूमि की बढ़ती मांग को कम करने में मददगार हो सकती है। इसे समझने के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ क्रीसलैंड द्वारा एक नया अध्ययन किया गया है। इस रिसर्च से पता चला है कि समुद्री सिवार यानी सीवीड की खेती न केवल खाद्य सुरक्षा की समस्या को हल कर सकती है, साथ ही यह जैव विविधता को होते नुकसान और जलवायु में आते बदलावों से निपटने में भी मददगार हो सकती है।

रिसर्च से पता चला है कि यदि 2050 तक इंसान अपनी खाद्य संबंधी जरूरत के करीब 10 फीसदी हिस्से को समुद्री सिवार की मदद से पूरा कर लेता है, तो इससे कृषि भूमि उपयोग को 11 करोड़ हेक्टेयर तक कम किया जा सकता है। मतलब स्पष्ट है कि सीवीड की खेती कृषि भूमि उपयोग पर बढ़ते दबाव को कम करने में मददगार हो सकती है। इस बारे में शोध और यूनिवर्सिटी ऑफ क्रीसलैंड के स्कूल ऑफ अर्थ एंड एनवायरनमेंटल साइंस से जुड़े शोधकर्ता स्कॉट स्पिलियास का कहना है कि सीवीड को भोजन, पशुओं के चारे, प्लास्टिक, फाइबर, डीजल और इथेनॉल सहित वाणिज्यिक उत्पादों के एक बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में उपयोग करने की काफी संभावनाएं मौजूद हैं। उनके अनुसार रिसर्च से पता चला है कि समुद्री सिवार, कृषि के लिए बढ़ते भूमि उपयोग की मांग को कम करने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर हर वर्ष कृषि क्षेत्र से होते करीब 260 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ₂) के

बराबर ग्रीनहॉउस गैसों के उत्पर्जन को कम करने में मददगार हो सकती है।

गौरतलब है कि समुद्री सिवार (सीवीड), समुद्री पौधों और शैवाल की विभिन्न प्रजातियों का सामान्य नाम है जो समुद्र, नदियों, झीलों और अन्य जल स्रोतों में उगते हैं। इनमें कुछ समुद्री सिवार बहुत छोटे तो कुछ बहुत बड़े होते हैं जैसे विशाल केल्प। हालांकि इनमें से ज्यादातर मध्यम आकार के होते हैं जो लाल, हरे, भूरे और काले आदि विभिन्न रंगों के होते हैं। यह सीवीड समुद्र तटों और तटरेखाओं के आसपास लगभग पूरी दुनिया में पाए जाते हैं।

इतना ही नहीं अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने ग्लोबल बायोस्फीयर मैनेजमेंट मॉडल का उपयोग करते हुए व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री सिवार की 34 से अधिक प्रजातियों का अध्ययन किया है और यह देखा है कि

दुनिया के किन क्षेत्रों में इन सीवीड प्रजातियों के बढ़ने की सम्भावना है। जहां इनकी खेती की जा सकती है। इसके साथ ही वैज्ञानिकों ने भूमि उपयोग में बदलावों, ग्रीनहॉउस गैसों के उत्पर्जन, पानी और उर्वरकों के उपयोग के साथ 2050 तक प्रजातियों पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए कई परिदृश्यों में इसके पर्यावरण को होने वाले फायदों का अनुमान लगाया है। रिसर्च के जो निष्कर्ष सामने आए हैं उनके अनुसार वैश्विक स्तर पर समुद्र का करीब 65 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र समुद्री सिवार की खेती के लिए अनुकूल है। इसका ज्यादातर हिस्सा इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया में है, क्योंकि इन दोनों देशों के आर्थिक नियंत्रण में समुद्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा आता है। जानकारी मिली है कि इंडोनेशियाई ईंडेजेड में करीब 11.4 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र



इस शैवाल की खेती के लिए उपयुक्त है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया में भी समुद्र का करीब 7.5 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र इसके अनुकूल है।

ऑस्ट्रेलिया में समुद्री सिवार की 22 से भी ज्यादा प्रजातियां हैं। जैसी रोजमरा में इस्तेमाल होने वाली फसलें गेहूं और मक्का कभी थी, जिन्हें पहले जांगली घास (वीड) समझा जाता

था। लेकिन हजारों वर्षों की ब्रीडिंग इनके उपयोग के बारे में विकसित की हैं जो आधुनिक समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उनके अनुसार सीवीड में भी भविष्य के लिए कुछ ऐसी ही अनुसार संभावनाएं मौजूद हैं।

बारिश, ओले और पाले की वजह से फिर किसानों को हुआ नुकसान

पंजाब। दो दिन की बारिश और ओलावृष्टि के साथ-साथ एक सप्ताह से पड़ रहे पाले ने उत्तर भारत के कई इलाकों, खासकर राजस्थान और पंजाब में सरसों की फसल को भारी नुकसान पहुंचाया है। राजस्थान के कृषि, सार्विकी के संयुक्त निदेशक टीसी गुप्ता ने कहा कि प्रारंभिक आकलन से पता चला है कि अब तक राजस्थान में बोइ गई फसल का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा खराब हुआ है। राज्य सरकार ने कृषि विभाग को फसल नुकसान का आकलन करने के लिए सर्वेक्षण करने का आदेश दिया है। गुप्ता ने कहा, %सर्वे पूरा होने के एक हफ्ते बाद ही स्पष्ट तस्वीर सामने आएंगी। किसानों ने 2022-23 रबी सीजन में सरसों की रिकॉर्ड बुवाई की है। कृषि विभाग द्वारा अपलोड किए गए आंकड़ों के अनुसार, 27 जनवरी 2023 तक देश में 97 लाख हेक्टेयर में सरसों की बुआई की जा चुकी है, जो पिछले सीजन की तुलना में लगभग सात लाख हेक्टेयर अधिक है। दूसरी तिलहन फसलों के मुकाबले सरसों का क्षेत्रफल काफी अधिक है। सरसों, घरेलू तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने और खाद्य तेल के आयात पर देश की निर्भरता को कम करने के लिए एक प्रमुख तिलहनी फसल है। उल्लेखनीय है कि भारत में साल भर में खाद्य तेल की जितनी खपत होती है, उसमें से करीब 56 फीसदी तेल आयात किया जाता है। जबकि देश में जो शेष 44 प्रतिशत खाद्य तेल का उत्पादन होता है, उसमें सरसों की हिस्सेदारी सबसे अधिक (39 प्रतिशत) है, इसके बाद सोयाबीन की 24 प्रतिशत और मूगफली की सात प्रतिशत हिस्सेदारी है। चालू रबी सीजन में राजस्थान में सबसे अधिक रकबा 39.722 लाख हेक्टेयर है, जो पिछले साल 35.3 लाख हेक्टेयर से अधिक था। 29 जनवरी को पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में भारी बारिश हुई। जबकि पिछले सप्ताह के दौरान शीत लहरों के कारण तापमान में गिरावट के कारण उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में पाला पड़ा था। अनुमान लगाया जा रहा है कि जमीनी पाले और ओलावृष्टि से होने वाले नुकसान के कारण बम्पर उत्पादन बाधित हो सकता है। शीत लहर से सबसे ज्यादा नुकसान उदयपुर, सिरोही, चूरू, अजमेर सहित अन्य जिलों में हुआ है। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के एक किसान ओम प्रकाश बताते हैं कि सरसों की फसल लगभग कार्टाई के चरण में है और ओलावृष्टि और पाले ने कई स्थानों पर खड़ी फसल को नुकसान पहुंचाया है। तेज हवाओं के कारण उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में पाला पड़ा था। उनके खेत में लगभग 30-35 प्रतिशत नुकसान हुआ है। पंजाब में भी, जहां गेहूं और चावल के क्षेत्र में विविधता लाने के लिए सरसों उगाने पर जोर दिया गया है, किसानों को पाले और बारिश से नुकसान हुआ है। हालांकि कुछ इलाकों में हल्की और रुक्खरुक्ख कर हुई बारिश से सरसों की फसल को भी फायदा हुआ है। तापमान में गिरावट से गेहूं की फसल को भी राहत मिली है। रबी फसल में सरसों के अलावा आलू को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। पंजाब के जालंधर, होशियारपुर, लुधियाना, अमृतसर, मोगा और पटियाला जैसे जिलों में आलू का अच्छा खासा उत्पादन होता है, लेकिन पाले के कारण आलू की खड़ी फसल को 80 प्रतिशत तक नुकसान की खबर है।